Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 6.471
Volume - 6, Issue - 2, February - 2023 Publication Date: 28/02/2023

DOIs:10.2018/SS/202302006 --:-- Research Paper / Article

अशांतियों (असांतियों) का धार्मिक जीवन: घाना (पश्चिमी अफ्रीका) का एक आदिवासी समुदाय

डॉ. इंद्राणी रॉय
एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग
जोशी – बेडेकर महाविद्यालय (स्वायत्त), ठाणे
ईमेल - mrs.indraniroy@rediffmail.com

सारांश : अशांति जनजाति पश्चिमी अफ्रीका में स्थित देश घाना की प्रमुख जनजातीय समुदाय है। सामाजिक और आर्थिक पहलुओं की तरह धर्म असांति समुदाय के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अशांति धर्म जहाँ एक ओर आध्यात्मिकता तथा अंधविश्वास का मिश्रण है तो दूसरी ओर इस धर्म में जीववादी तथा अलौकिकवादी विचारो का भी समावेश है। इसमें विभिन्न प्रकार के धार्मिक विश्वास, विचार, नैतिक मूल्य, कर्मकांड और संस्कार शामिल हैं। इस शोध पत्र का उद्देश्य अशांति जनजाति के धार्मिक जीवन का गहराई से अध्ययन करना तथा उनके धार्मिक जीवन के हरेक पहलुओं पर प्रकाश डालना है।

मुख्य शब्द : अशांति, जनजाति, धार्मिक, आत्मा, घाना, पश्चिमी अफ्रीका ।

1. प्रस्तावना :

अशांति जनजाति पश्चिमी अफ्रीका में स्थित देश घाना की प्रमुख जनजातीय समुदाय है। 17वीं शताब्दी में, अशांति जनजाति एक शक्तिशाली साम्राज्य के रूप में उभरी। उस क्षेत्र में सोने की खानों की प्रचुरता ने उन्हें सबसे समृद्ध बना दिया । उनके लड़ाई करने की कुशलता और निडर रवैये ने उन्हें कुछ ही दिनों में पश्चिम अफ्रीका का निर्विवाद स्वामी घोषित किया। । कहा जाता है कि इससे पहले उनपर डेन्क्रिया नाम के एक कबीले का आधिपत्य था। जिनको वे लाल मिट्टी की आपूर्ति करते थे। चूंकि मिट्टी को असन कहा जाता था इसलिए वे अशांति नाम से पुकारे जाने लगे।सत्ताधारी होने के कारण, समाज पर भी उनका दबदबा बना रहा। इतने शक्तिशाली और समृद्ध होने के बाबजूद भी उन्होंने धर्म में अपनी असीम आस्था को नहीं छोड़ा। सामाजिक और आर्थिक पहलुओं की तरह धर्म अशांति समुदाय के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अशांति धर्म जहाँ एक ओर आध्यात्मिकता तथा अंधविश्वास का मिश्रण है तो दूसरी ओर इस धर्म में जीववादी तथा अलौकिकवादी विचारो का भी समावेश है। इसमें विभिन्न प्रकार के धार्मिक विश्वास, विचार, नैतिक मूल्य, कर्मकांड और संस्कार शामिल हैं।

2. परमेश्वर का सर्वोच्य स्थान:

धर्म पर गहरी आस्था रखने वाले अशांति समुदाय, भगवान को सर्वोपरि मानते हैं। वे परमेश्वर को "न्यामे" कह कर पुकारते हैं। जिनका कोई मंदिर या संगठित पंथ नहीं है। उनका मानना है कि ईश्वर संपूर्ण ब्रह्मांड का निर्माता है। वह जीवन के साथ-साथ मृत्यु भी देता है।पृथ्वी के सभी गतिविधियों की देखरेख करता है। पापमुक्त जीवन जीने तथा अपराध के लिए इनाम और सजा दोनों सुनाता है। असांति के अनुसार, भगवान सभी जीवित और निर्जीव प्राणियों के रक्षक हैं। उनके पास सब कुछ बनाए रखने और नष्ट करने की शक्ति है। भगवान पापों से घृणा करते हैं और उस व्यक्ति से भी घृणा करते हैं जो कोई भी पाप करता है। ईश्वर अपील करने की अंतिम अदालत है। नित्य प्रणाम में उनका का नाम लिया जाता है। उनके बारे में आम कहावतें, कसमें, पहेलियां कही जाती हैं

अशांति समुदाय घरों के सामने एक तिपाई-शीर्ष पेड़ लगाते हैं। वे इसे न्यामेदुआ कहते हैं, यह पेड़ भगवान का पेड़ कहलाता है। पीतल के बेसिन से बारिश के पानी को इकट्ठा किया जाता है। ये जल काफी पवित्र माना जाता है। परिवार के सदस्यों को पवित्र करने तथा उनकी भलाई के लिए ये जल उनपर छिड़का जाता है । इस पानी को भगवान का आशीर्वाद माना जाता है। आशीर्वाद के पानी का छिड़काव एडवेरा पौधे के पत्ते से की जाती है। इस पेड़ को काफी पवित्र माना जाता है। परिवार के बुजुर्ग, अपने परिवार के लोगो के पापों लिए ईश्वर से क्षमा प्रार्थना करते हैं। आमतौर पर परम पिता परमात्मा की पूजा शनिवार को की जाती है, शनिवार को काफी शुभ दिन माना जाता है ।

पृथ्वी देवी: अशांति "पृथ्वी" को देवी मानते है। उनके अनुसार पृथ्वी का निर्माण जीवन को सहारा देने के लिए किया गया है। जीवो का पालन करना , उनकी देखभाल करना और उनको खिलाना ये सब धरती माता का कर्तव्य है। पृथ्वी की आत्मा कृषि से जुड़ी है। धरती माँ फसल उगा कर दुनिया को खिलाती है। उनकी मान्यता है कि पृथ्वी का जन्म गुरुवार को हुआ था। शासक ओकोमफू अनोके का विश्वास था कि सप्ताह में एक दिन पृथ्वी माता को आराम दिया जाये ।अतः उनके शासन काल में गुरुवार को सभी कृषि सम्बंधित सारी गतिविधियों पर रोक लगा दी गई थी ताकि उस दिन पृथ्वी को शांति से रहने दिया जाये।

मध्यस्थ देवता:प्रकृति में असीम श्रद्धा रखने वाले अशांति समुदाय का मानना है कि नदी, पेड़, हवा, पहाड़ , झील ये सभी मध्यस्थ देवता हैं। जिनका काम मानव संदेश तथा प्रार्थना को सर्वोच्य देवता के पास भेजना है । अतः ये प्राकृतिक सम्पदाएँ मध्यस्थ देवता के रूप में पूजे जाते हैं ।

प्रकृति की पूजा:अन्य जनजातियों की तरह अशांति समुदाय प्रकृति की पूजा करते है । प्रकृति को भगवान के रूप में पूजा जाता है। नदी, वृक्ष, झील, पहाड़, समुद्र, तूफान, वायु आदि की पूजा करते हैं। ओक के वृक्ष की पूजा उनमे काफी प्रचलित है। वे सूर्य और चंद्रमा की भी पूजा करते हैं। उनका मानना है कि भगवान ने प्रकृति में बहुत सी चेतन और निर्जीव वस्तुओं को विशेष शक्तियां दी हैं जिससे मनुष्य का उपकार हो। माना जाता है कि इन वस्तुओं में मानवीय क्षमताएँ होती हैं जैसे कि बात करने की क्षमता, दर्द महसूस करना, खून बहना और अस्वस्थ होना इत्यादि । उनके अनुसार प्राकृतिक सम्पदाओं का जरुरत से ज्यादा शोषण या अनियमित ढंग से उपयोग नहीं किया जाना चाहिए। अन्यथा, उनकी आत्मा नाराज हो जाएँगी और उनकी नाराजगी दुर्भाग्य और आपदा को आमंत्रित करेंगी।

जल पूजा: अशांति जल को काफी पवित्र मानते है और जल पूजा करते है। माना जाता है कि जल की आत्मा झरनों, नदियों, झीलों और समुद्रों में निवास करती हैं। इसीलिए आत्मा की शुद्धि की प्रक्रिया में जल छिड़के जाते हैं।

टोटेम: सभी कुलों की रक्षा के लिए अलग-अलग टोटेम होते हैं। टोटेम कोई भी वस्तु ,पक्षी या पशु के प्रतीक होते हैं जिनका धार्मिक या आध्यात्मिक महत्व होता है। इनको काफी श्रद्धा किया जाता है। उन्हें पवित्र माना जाता है। अलग-अलग अशांति कुलो में अलग अलग जानवरों या पक्षियों के प्रतीक होते हैं। इन टोटेमो को कुलों के बीच उचित सम्मान दिया जाता है। उन्हें भोजन के लिए कभी नहीं मारा जाता है। टोटेम अच्छे भाग्य और समृद्धि लाता है।

3. मृत्यु के बाद के जीवन में विश्वास :

अशांति समुदाय का विश्वास है कि मृत्यु के बाद भी जीवन है। वे स्वर्ग में विश्वास नहीं करते हैं लेकिन उनकी मान्यता है कि मृत्यु के बाद मनुष्य एक विशेष स्थान पर जाते हैं जिसे असमांडो कहते हैं। हर कोई उस स्थान पर जाने की कामना करता है और इसलिए वे एक पाप रहित जीवन जीना चाहते हैं। ताकि मरने के बाद उन्हें असमांडो में रहने का सौभाग्य प्राप्त हो। उनका विश्वास है कि मृत्यु से पहले मनुष्य जैसा होता है वैसा ही जीवन उसे मृत्युलोक में भी मिलता है। यदि मृत व्यक्ति एक प्रमुख है तो वह वहां एक प्रमुख के रूप में जाएगा। पुराने दिनों में जब एक राजा की मृत्यु हो जाती थी तो उसके आदमियों को भी इस विश्वास के साथ बलिदान कर दिया जाता था कि वे मृत देश में भी राजा के साथ रहेंगे और उसकी सेवा करेंगे। वे यह भी मानते हैं कि मृत व्यक्ति आध्यात्मिक प्राणियों के रूप में रहते है और दुनिया में जो कुछ भी होता है उस पर निगरानी रखते है।

पूर्वजों की पूजा: उनका मानना है कि मृत्यु के बाद, मनुष्य की आत्मा (ओकरा) एक आध्यात्मिक दुनिया में प्रवेश करती है ।मनुष्य का भौतिक शरीर आध्यात्मिक रूप में परिवर्तित हो जाता है और पूर्वज के रूप में जीवित रहता है। उनके अनुसार, पूर्वज वे हैं जो वृद्धावस्था में मरते हैं। जिन्होंने बहुत ही योग्य जीवन जिया है । जिन्होंने हमेशा समाज के लिए अच्छा काम किया। जिन्होंने आध्यात्मिक और सांसारिक जीवन में संतुलन बनाए रखा। अशान्तियों का विश्वास है कि उनके पूर्वज संकट के समय उनकी रक्षा करते हैं । पूर्वजो पर उनकी इतनी श्रद्धा होती है कि उत्सव के दिनों में वो जो कुछ पकाते है उसका एक हिस्सा पूर्वजो को समर्पित करते है। यह उनका विश्वास है कि इससे परिवार का मुख्य व्यक्ति सच्चाई और लगन से काम करता है। तो उन्हें पूर्वजो का आशीर्वाद मिलता है। और अगर कोई पाप कार्य करते है तो उन्हें पूर्वज दंड भी देते है।

आत्मा की शुद्धि: अशांति समुदाय आत्मा की शुद्धि में विश्वास रखते हैं। उनका मानना है कि मनुष्य के अंदर की आत्मा एक विशेष देवता है। यदि यह नाराज हो जाए तो मनुष्य की मृत्यु का कारण बन सकती है। इसलिए उनके अनुसार मानव शरीर को आत्मा द्वारा मारे जाने से बचाने के लिए, आत्मा की शुद्धि करना आवश्यक है। जब भी कोई अपराध करने का अहसास होता है आत्मा का शुद्धिकरण किया जाता है। निम्नलिखित अवसरों पर शुद्धि से आत्मा को शांत किया जाता है।-

1. यदि कोई अदालत में मुकदमा जीत जाता है, तो वह आत्मा को शांत करता है।

2. यदि कोई अपने कोई करीबी रिश्तेदार जिसने उसे सहायता की हो उसके खिलाफ बोलता है और बाद में माफ़ी मांगता है तो उसे उस रिश्तेदार की आत्मा को शांत करने के लिए संस्कार करना पड़ता है।

3. यदि किसी का जीवनसाथी कोई व्यभिचार करता है और यह ज्ञात हो जाता है, तो उसे आत्मा शुद्धि के संस्कारों का पालन करके आत्मा को शांत करना पड़ता है।

4) यदि कोई किसी घातक बीमारी से ठीक हो जाता है, तो उसे आत्मा को शांत करना पड़ता है आत्मा के शुद्धिकरण के लिए काफी सारी प्रक्रिया करनी पड़ती है

एक व्यक्ति, जो शुद्धिकरण का संस्कार करता है, अपने नाखून काटकर स्नान करता है और सफेद वस्त्र धारण करता है। वह एक सफेद स्टूल पर बैठता है। उसके सामने जल से भरा एक पीतल का कलश रखा जाता है। अड्वेरा के पत्तों को पानी में रखा जाता है। पानी में सफेद घोला जाता है। मैश किए हुए रतालू, उबले अंडे और भुने हुए कलेजी का उपयोग, आत्मा को प्रसाद चढ़ाने के लिए किया जाता है। शुद्धिकरण करने वाला व्यक्ति अपनी पत्नी और बच्चों को बुलाता है और उन्हें अपने पास बैठने के लिए कहता है। वह जीभ को थोड़े से नमक में डुबाकर बाहर तीन बार छिड़कता है। फिर आत्मा का नाम लेकर शुद्धि का कारण बताता हैं। उसके बाद, आत्मा को रतालू, उबला हुआ अंडा, भुना हुआ कलेजा और एडवेरा के पत्ते खाने के लिए आमंत्रित किया जाता है । इन सभी प्रसादों को सात भागों में बांटा गया है। भगवान को भोग लगाने के बाद पूरा परिवार एक साथ भोजन करता है। किसी भी पाप से शुद्ध करने के लिए परिवार के सदस्यों पर अड्वेरा के पत्तों के साथ रंगीन पानी छिड़का जाता है।

शव को दफ़नाने की प्रक्रिया: शव को दफ़नाने से पहले अंतिम संस्कार की प्रक्रिया की जाती है। शव को धोने का जिम्मा परिवार के मायके पक्ष के सदस्यों का होता है। तीन बार बाल और शरीर धोये जाते हैं धोने के लिए स्पंज, साबुन और गर्म पानी का उपयोग किया जाता है। मृत शरीर की धुलाई मृत व्यक्ति के बच्चों या भाइयों द्वारा की जाती है। शव को कपड़े पहनाकर बिस्तर पर लिटा दिया जाता है। अशांति धर्म में शिशु के जन्म के बाद लगभग इसी प्रकार के संस्कार किए जाते हैं। यह मृत्यु और जन्म के बीच एक मजबूत बंधन को दर्शाता है। मृत शरीर को ढकने के लिए सादे सफेद कपड़े का प्रयोग किया जाता है। मृत शरीर के साथ प्रतीकात्मक वस्तुओं को भी दफनाया जाता है उदहारण के तौर पर एक धनी व्यक्ति के मृत शरीर के माथे पर एक सिक्का रखा जाता है। सिक्का धन का प्रतीक है। महिला के मृत शरीर के साथ एक घड़ा दफनाया जाता है। घड़ा गृहस्थी के कार्य का प्रतीक है और सैनिक के साथ धनुष बाण दफनाया जाता है। दफनाया जाता है। धनुष-बाण पराक्रम का।

अंतिम संस्कार समारोह: अशांति समुदाय मृत रिश्तेदारों के अंतिम संस्कार समारोह को बहुत महत्व देते हैं। क्योंकि उत्सव उनके सम्मान में किया आयोजित जाता है। पुराने दिनों में यह भी मान्यता थी कि जिन रिश्तेदारों का अंतिम संस्कार नहीं किया जाता है। वे मृतकों की भूमि (असमांडो) के रास्ते पर रुक जाते हैं। इसीलिए उन्हें उनके गंतव्य तक पहुँचाने के लिए अंतिम संस्कार किया जाता था। शव को दफ़नाने के बाद, अंतिम संस्कार समारोह का आयोजन किस दिन किया जाए ये मृत व्यक्ति का परिवार तय करता है। अंतिम संस्कार समारोह में शामिल होने के लिए सभी रिश्तेदारों और दोस्तों को आमंत्रित कियाजाता है ।आमंत्रितों के लिए खाने-पीने की व्यवस्था की जाती है। मृतक के करीबी रिश्तेदार लाल कपड़ा पहनते हैं। बाकि के लोग समारोह में काला कपडा पहन कर शामिल होते हैं। अंतिम संस्कार में शामिल होने वाले मृतक के रिश्तेदार और दोस्त शोक संतप्त परिवार को सांत्वना देते हैं। और कुछ दान करते हैं। मृत व्यक्ति के सम्मान के लिए अडोसा तैयार किया जाता है। अडोसा पीतल के बर्तन में कपड़े, हार, मोतियाँ, रूमाल और रेशम सामग्री का ढेर होता है। लोग ढोल की थाप पर अडोसा के सामने नृत्य करते हैं।

ताबीजों का प्रयोग: अशांति धर्म में अंधविश्वास की भावना नजर आती है। बुरी आत्मा से बचने तथा अपनी सुरक्षा के लिए ताबीजों का प्रयोग करते है। पुराने ज़माने में तरह तरह के ताबीजों का प्रयोग किया जाता था। कबीले का राजा अपनी सुरक्षा के लिए लड़ाई करते समय भरपूर ताबीजों से जड़ा कवच पहनते थे।

4. प्रतिक चिन्हों का धर्म में महत्व-: अशांति धर्म में प्रतिक चिन्हों काफी का महत्व है। उदाहरण के लिए

--- गाय न्यामे (भगवान की सर्वोच्चता का प्रतीक)

-- न्यामे बिरिबी वो सोरो (भगवान स्वर्ग में है)

-- न्यामे नति (भगवान की कृपा से)

-- सोरोममा (एक अनुस्मारक कि भगवान पिता हैं और सभी लोगों पर नज़र रखते हैं)

-- न्यामे दुआ (भगवान का पेड़, भगवान की उपस्थिति और सुरक्षा का प्रतीक)

5. नैतिक मूल्य:
अशांति समुदाय ने लोगों के आचरण को निर्देशित करने और समाज में उनके व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए कुछ नैतिक मूल्यों को समाज में लागु किया।

व्यभिचार मत करो, चोरी मत करो, अनादर मत करो, या किसी के खिलाफ झूठी गवाही मत लाओ। किसी के खिलाफ किसी भी तरह के टोने-टोटके का प्रयोग न करें।झाड़ी में सेक्स न करें।किसी को गाली मत दो।क्रोध में आकर किसी भी भोजन का तिरस्कार न करें।किसी को धोखा मत दो, किसी के प्रति कोई बुरी नीयत न रखें।जादू-टोना न करें।

6. वर्जनाएं:
वर्जनाएं, विशिष्ट धार्मिक या सांस्कृतिक निषेध हैं जो मानव जीवन में नैतिकता तथा पवित्रता बरकरार रखने के लिए, समुदाय की सुरक्षा तथा भलाई और भविष्य को सुनिश्चित करने के लिए पालन की जाती हैं। असांति अपनी वर्जनाओं के प्रति काफी सतर्क रहते हैं।उनका पालन काफी सख्ती से किया जाता है। उनका मानना है कि ये भगवान द्वारा समाज के कल्याण और सुरक्षा के लिए लगाए गए हैं। निषेध सभी गैरकानूनी कार्यों के खिलाफ लोगों के मन में भय पैदा करता है। जैसे कि प्राकृतिक सम्पदाओं का अनियंत्रित उपयोग, किशोर गर्भावस्था, व्यभिचार इत्यादी। इन निषेधों का पालन नहीं करने से मनुष्य को गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जैसे दौरा पड़ना, बांझपन, खाने-पीने में असमर्थता, रात में अजीबोगरीब चीजें देखना इत्यादी। कठोर दंड देने का नियम और किसी भी पाप से मुक्त होने के लिए अनुष्ठानों का पालन करना ये दो रास्ते अपनाये जाते है पाप या अपराध से बचने के लिये ।

7. निष्कर्ष:
इस शोध पत्र में घाना के अशांति समुदाय के धर्म का गहराई से अध्यन कर धर्म के हरेक पहलुओं पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया गया है। इसमें आध्यात्मिकता, अलौकिकवाद, कर्मकांड, नैतिकता, अंधविश्वास का मिश्रण नजर आता है।धर्म का आधार लेकर उन्होंने समाज का हर नियम बनाया है। प्रकृति तथा प्राकृतिक सम्पदाओं को बचाये रखना उनके धर्म का एक मुख्य उद्देश्य होता है। जंगली जानवरो, पशु-पक्षियों को वे काफी सन्मान देते है। मृत्यु के बाद जीवन है इस विश्वास के साथ पुर्वोजो के प्रति काफी श्रद्धा रखते तथा पाप रहित जीवन जापान का प्रयास करते है। आधुनिकता तथा पश्चिमी संस्कृति की छाप से यह समाज अछूता नहीं है। ईसाई धर्म तथा इस्लाम में बड़े पैमाने में परिवर्तन नज़र आता है। रीति रिवाजो, कर्मकांड के तरीको में भी आधुनिकता का प्रभाव दिखता है। इस शोध पत्र के तथ्य पत्रिका,शोध लेख,किताबो, अवलोकन,व्यक्तिगत साक्षात्कार तथा अशांति की राजधानी कुमासी दौरे के दौरान संग्रह की गयी है।

संदर्भ सूचि

1. क्राडोवो, ओ.2002. अ हैंडबुक बुक ऑन अशांति कल्चर:कुमासी घाना: सीता प्रेस बोक्रोम.
2. क्राडोवो, ओ.2004. एन आउटलाइन ऑफ़ असांते हिस्ट्री: पार्ट 1 कुमासी घाना: सीता प्रेस बोक्रोम.
3. क्राडोवो, ओ.2000. एन आउटलाइन ऑफ़ असांते हिस्ट्री: पार्ट 2 कुमासी घाना: सीता प्रेस बोक्रोम.
4. स्टेफेनअबाबीओ,डॉ एरिकअप्पनअसंते,डॉ स्टीव. 2019.अशांति, इंडिजनस कल्चर : अ फॉर्म ऑफ़ रिलीजियस रिडेम्पशन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ हुमैनिटीज एंड सोशल साइंस खंड ५
5. विक्टर सेलोरमे गेदजी,2014. द असांति ऑफ़ घाना,इंटरनेशनल जरनल ऑफ़ अफ्रीकन सोसाइटी कल्चर्स एंड ट्रडिशन्स, खंड 2
6. अशांति पीपुल ट्रेडिशन एंड कल्चर , अफ्रीकन क्राफ्ट मार्किट.
7. https://www.africancraftsmarket.com/african-tribes/ashanti-people.html

अशांति जनजाति के विभिन्न कबीले के अलग अलग टोटेम (माहिया पैलेस म्यूजियम, कुमासी)
फोटो साभार डॉ. इंद्राणी रॉय

विभिन्न रूपों के ताबीज (फोटो साभार डॉ. इंद्राणी रॉय) (माहिया पैलेस म्यूजियम, कुमासी)

असांति अंतिम संस्कार समारोह में भाग लेते हुए
www.pinarest.com

अंतिम संस्कार की पोशाक(फोटो साभार डॉ. इंद्राणी रॉय)